Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

आधुनिक भारत

भाग-1

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: CSPM04

दृष्टि The Vision

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

आधुनिक भारत

(भाग–1)

दृष्टि The Vision

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 8750187501, 011-47532596
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web : www.drishtiias.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिए निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

UPSC DLP

विषय सूची (Contents)

1.	भारत में यूरोपीय कंपनियों का आगमन	5-12
2.	अंग्रेज़ों की भारत विजय	13-31
3.	भारत में ब्रिटिश शासकों की आर्थिक नीति एवं उसका प्रभाव	32-48
4.	ब्रिटिश भारत में औपनिवेशिक नीतियाँ	49-73
5.	ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह	74-97
6.	सामाजिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक सुधार आंदोलन	98-121
7.	भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन	122-152

अध्याय
1

भारत में यूरोपीय कंपनियों का आगमन (Arrival of European Companies in India)

1.1 पुर्तगालियों का भारत आगमन
1.2 भारत में डचों का आगमन
1.3 अंग्रेज़ों का भारत आगमन
1.4 भारत में फ्राँसीसियों का आगमन

1.1 पुर्तगालियों का भारत आगमन *(Arrival of Portuguese in India)*

भारतीय इतिहास में व्यापार-वाणिज्य की शुरुआत हड़प्पा काल से मानी जाती है। भारत की प्राचीन सांस्कृतिक विरासत, आर्थिक संपन्नता, आध्यात्मिक उपलब्धियाँ, दर्शन, कला आदि से प्रभावित होकर मध्यकाल में बहुत से व्यापारियों एवं यात्रियों का यहाँ आगमन हुआ। किंतु, 15वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध एवं 17वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के मध्य भारत में व्यापार के प्रारंभिक उद्देश्यों से प्रवेश करने वाली यूरोपीय कंपनियों ने यहाँ की राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक नियति को लगभग 350 वर्षों तक प्रभावित किया। इन विदेशी शक्तियों में पुर्तगाली प्रथम थे। इनके पश्चात् डच, अंग्रेज़, डेनिश तथा फ्राँसीसी आए। डचों के अंग्रेज़ों से पहले भारत आने के बावजूद ब्रिटिश 'ईस्ट इंडिया कंपनी' की स्थापना डच 'ईस्ट इंडिया कंपनी' से पहले हुई।

यूरोपीय शक्तियों में पुर्तगाली कंपनी ने भारत में सबसे पहले प्रवेश किया। भारत के लिये नए समुद्री मार्ग की खोज पुर्तगाली व्यापारी वास्कोडिगामा ने 17 मई, 1498 को भारत के पश्चिमी तट पर अवस्थित बंदरगाह कालीकट पहुँचकर की। वास्कोडिगामा का स्वागत कालीकट के तत्कालीन शासक जमोरिन (यह कालीकट के शासक की उपाधि थी) द्वारा किया गया। तत्कालीन भारतीय व्यापार पर अधिकार रखने वाले अरब व्यापारियों को जमोरिन का यह व्यवहार पसंद नहीं आया, अतः उनके द्वारा पुर्तगालियों का विरोध किया गया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि पुर्तगालियों के भारत आगमन से भारत एवं यूरोप के मध्य व्यापार के क्षेत्र में एक नए युग का सूत्रपात हुआ। भारत आने और जाने में हुए यात्रा-व्यय के बदले में वास्कोडिगामा ने करीब 60 गुना अधिक धन कमाया। इसके बाद धीरे-धीरे पुर्तगालियों ने भारत आना आरंभ कर दिया। भारत में कालीकट, गोवा, दमन, दीव एवं हुगली के बंदरगाहों में पुर्तगालियों ने अपनी व्यापारिक कोठियों की स्थापना की। भारत में द्वितीय पुर्तगाली अभियान पेड्रो अल्वरेज़ कैब्राल के नेतृत्व में सन् 1500 ई. में छेड़ा गया। कैब्राल ने कालीकट बंदरगाह में एक अरबी जहाज़ को पकड़कर जमोरिन को उपहारस्वरूप भेंट किया। 1502 ई. में वास्कोडिगामा का पुनः भारत आगमन हुआ। भारत में प्रथम पुर्तगाली फैक्ट्री की स्थापना 1503 ई. में कोचीन में की गई तथा द्वितीय फैक्ट्री की स्थापना 1505 ई. में कन्नूर में की गई।

पुर्तगाल से प्रथम वायसराय के रूप में फ्राँसिस्को डी अल्मीडा का भारत आगमन सन् 1505 ई. में हुआ। यह 1509 ई. तक भारत में रहा। उसे पुर्तगाली सरकार की ओर से यह निर्देश दिया गया था कि वह भारत में ऐसे दुर्गों का निर्माण करे जिनका उद्देश्य सिर्फ सुरक्षा न होकर हिंद महासागर के व्यापार पर पुर्तगाली नियंत्रण स्थापित करना भी हो। उसके द्वारा अपनाई गई यह नीति 'नीले या शांत जल की नीति' कहलाई। 1508 ई. में अल्मेडा संयुक्त मुस्लिम नौसैनिक बेड़े (मिश्र + तुर्की + गुजरात) के साथ चौल के युद्ध (Battle of Chaul, 1508) में पराजित हुआ। अगले वर्ष अर्थात् 1509 ई. में अल्मेडा ने इसी संयुक्त मुस्लिम बेड़े को पराजित किया। इसने हिंद महासागर में पुर्तगालियों की स्थिति को मज़बूत करने के लिये सामुद्रिक नीति को अधिक महत्त्व दिया।

सन् 1509 ई. में भारत में अगले पुर्तगाली वायसराय के रूप में अल्फांसो द अल्बुकर्क का आगमन हुआ। इसे भारत में पुर्तगाली शक्ति का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। इसने कोचीन को अपना मुख्यालय बनाया। अल्बुकर्क ने 1510 ई. में गोवा को बीजापुर के शासक युसुफ आदिलशाह से छीनकर अपने अधिकार क्षेत्र में कर लिया। इसने 1511 ई. में दक्षिण-पूर्व एशिया की महत्त्वपूर्ण मंडी मलक्का तथा 1515 ई. में फारस की खाड़ी में अवस्थित हॉरमुज पर अधिकार कर लिया। अल्बुकर्क ने पुर्तगाली पुरुषों को पुर्तगालियों की आबादी बढ़ाने के उद्देश्य से भारतीय स्त्रियों से विवाह करने के लिये प्रोत्साहित किया तथा पुर्तगाली सत्ता एवं संस्कृति के महत्त्वपूर्ण केंद्र के रूप में गोवा को स्थापित किया। यह वह समय था जब पुर्तगालियों ने प्रत्यक्ष रूप से भारतीय राजनीति में हस्तक्षेप करना प्रारंभ कर दिया था।

1758 ई. में लाली ने फोर्ट सेन्ट डेविड पर नियंत्रण स्थापित कर लिया किंतु तंजौर पर अधिकार करने का उसका सपना पूरा नहीं हो पाया। इससे फ्राँस एवं लाली की व्यक्तिगत छवि पर बुरा असर पड़ा। लाली ने युद्ध में अपनी स्थिति मज़बूत करने के लिये बुस्सी को हैदराबाद से वापस बुला लिया। यह एक बहुत बड़ी भूल साबित हुई। 1760 ई. में अंग्रेज़ों ने सर आयर कूट के नेतृत्व में वांडिवाश के युद्ध में फ्राँसीसियों को हरा दिया। अंग्रेज़ों ने बुस्सी को कैद कर लिया तथा 1761 ई. में पांडिचेरी पर अपना नियंत्रण स्थापित करने के बाद माही एवं जिन्जी पर भी उन्होंने कब्ज़ा कर लिया। तृतीय कर्नाटक युद्ध का अंत सन् 1763 ई. में 'पेरिस की संधि' से हुआ। इस संधि की शर्तों के अनुसार अंग्रेज़ों ने चंद्रनगर के अतिरिक्त अन्य सभी फ्राँसीसी प्रदेश, जो उस समय उनके नियंत्रण में थे, फ्राँस को वापस कर दिये।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. निम्नलिखित पर विचार कीजिये: **UPSC (Pre) 2012**
   1. मृदा के स्वरूप तथा उपज के गुणों के आधार पर भूमि राजस्व का मूल्यांकन।
   2. युद्ध में चलती-फिरती तोपों का उपयोग
   3. तंबाकू और लाल मिर्च की खेती

   उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से अंग्रेज़ों की भारत को देन थी/थीं?
   (a) केवल 1
   (b) केवल 1 और 2
   (c) केवल 2 और 3
   (d) उपरोक्त में से कोई नहीं।

2. पांडिचेरी (वर्तमान पुदुच्चेरी) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये: **UPSC (Pre) 2010**
   1. पांडिचेरी पर कब्ज़ा करने वाली पहली यूरोपीय शक्ति पुर्तगाली थे।
   2. पांडिचेरी पर कब्ज़ा करने वाली दूसरी यूरोपीय शक्ति फ्राँसीसी थे।
   3. अंग्रेज़ों ने कभी पांडिचेरी पर कब्ज़ा नहीं किया।

   उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
   (a) केवल 1 (b) केवल 2 और 3
   (c) केवल 3 (d) 1, 2 और 3

3. अंग्रेज़ों ने सूरत में अपनी पहली फैक्ट्री किसकी अनुमति से स्थापित की थी? **UPSC (Pre) 2009**
   (a) अकबर (b) जहाँगीर
   (c) शाहजहाँ (d) औरंगज़ेब

4. फ्राँसिस्को द अल्मेडा निम्नलिखित में किस यूरोपीय कंपनी के प्रथम वायसराय के रूप में भारत आया था?
   (a) फ्राँसीसी (b) डच
   (c) पुर्तगाली (d) ब्रिटिश

5. भारत में पुर्तगाली शक्ति का वास्तविक संस्थापक माना जाता है:
   (a) अल्बुकर्क को
   (b) नीनो-डी-कुन्हा को
   (c) फ्राँसिस्को द अल्मेडा को
   (d) फ्राँसिस्को जेवियर को

6. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
   1. कैप्टन हॉकिन्स ब्रिटेन के राजदूत के रूप में मुगल सम्राट शाहजहाँ के दरबार में भारत आया था।
   2. अंग्रेज़ों ने दक्षिण भारत में अपनी पहली व्यापारिक कोठी मसुलीपट्टनम में स्थापित की थी।
   3. फोर्ट सेंट जॉर्ज का निर्माण पांडिचेरी में किया गया था।

   उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
   (a) केवल 1
   (b) केवल 2
   (c) केवल 1 और 3
   (d) 1, 2 और 3

7. निम्नलिखित में से किस मुगल शासक ने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को व्यापारिक सुविधाओं वाला एक फरमान जारी किया था?
   (a) औरंगज़ेब
   (b) शाहजहाँ
   (c) फर्रुखशियर
   (d) बहादुरशाह प्रथम

8. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
   (a) डच कंपनी सरकार द्वारा संरक्षित थी और यह सरकारी आर्थिक सहायता पर निर्भर थी।
   (b) पुर्तगालियों ने आयात-निर्यात पर नियंत्रण स्थापित करने के लिये कार्ट्ज पद्धति का प्रयोग किया था।
   (c) भारत में गोथिक स्थापत्य कला अंग्रेज़ों की देन है।
   (d) उपरोक्त सभी।

9. भारत में यूरोपीय कंपनियों के आगमन का प्राथमिक उद्देश्य क्या था?
   (a) औपनिवेशिक विस्तार करना।
   (b) पूरब की संस्कृति से परिचित होना।
   (c) व्यापार करना।
   (d) भारत के साथ राजनयिक संबंध स्थापित करना।

10. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
   1. अल्बुकर्क ने पुर्तगाली पुरुषों को भारतीय स्त्रियों से विवाह करने के लिये प्रोत्साहित किया था।
   2. बेदरा के युद्ध में अंग्रेज़ों ने डचों को पराजित किया था।

   उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
   (a) केवल 1
   (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों
   (d) न तो 1 और न ही 2

11. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
   1. भारत में डचों का आगमन पुर्तगालियों के बाद हुआ था।
   2. डचों की व्यापारिक व्यवस्था कार्टेल (Cartel) अर्थात् सहकारिता पर आधारित थी।

   उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
   (a) केवल 1
   (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों
   (d) न तो 1 और न ही 2

12. भारत में पुर्तगालियों के व्यापार क्षेत्र में पतन के निम्नलिखित में से कौन-से कारक ज़िम्मेदार थे?
   1. अंग्रेज़ी तथा डच शक्तियों का विरोध
   2. धार्मिक असहिष्णुता की नीति
   3. समुद्री लूटपाट की नीति

   कूट:
   (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2 और 3
   (c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

13. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिये:

सूची-I	सूची-II
A. फ्राँसिस डे	1. मद्रास का संस्थापक
B. जॉब चॉरनाक	2. कलकत्ता का संस्थापक
C. जैरॉल्ड आन्गियार	3. बंबई का संस्थापक

   कूट:

	A	B	C
(a)	1	2	3
(b)	1	3	2
(c)	2	1	3
(d)	2	3	1

14. 1746-48 के मध्य प्रथम कर्नाटक युद्ध किन दो यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों के मध्य हुआ था?
   (a) डच एवं अंग्रेज़ (b) अंग्रेज़ एवं फ्राँसीसी
   (c) अंग्रेज़ एवं पुर्तगाली (d) पुर्तगाली एवं डच

15. अंग्रेज़ों ने निम्नलिखित में से किसके नेतृत्व में वांडिवाश के युद्ध में फ्राँसीसियों को हराया था?
   (a) काउंट दी लाली (b) गोडेहू
   (c) आयर कूट (d) ला बूर्दने

16. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
   1. 1498 ई. में वास्कोडिगामा भारत के पश्चिमी तट पर कालीकट पहुँचा था।
   2. भारत में सर्वप्रथम पुर्तगाली यूरोपीय कंपनी का आगमन हुआ था।
   3. भारत में प्रथम डच फैक्ट्री की स्थापना मसुलीपट्टनम में हुई थी।
   4. ईसाई पादरी मॉन्सरेट तथा फादर एक्वाविबा का भारत आगमन मुगल शासक अकबर के हुआ था।

   उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
   (a) केवल 1, 2 और 3 (b) केवल 2, 3 और 4
   (c) केवल 1 और 4 (d) 1, 2, 3 और 4

17. द्वितीय कर्नाटक युद्ध का कारण निम्नलिखित में से क्या था?
   (a) फ्राँसीसी तथा ब्रिटिश कंपनियों द्वारा क्रमशः हैदराबाद और कर्नाटक के विवादास्पद उत्तराधिकारियों को समर्थन देना।
   (b) ऑस्ट्रिया और प्रशा के बीच सप्तवर्षीय युद्ध।
   (c) ऑस्ट्रिया में उत्तराधिकार का युद्ध।
   (d) इनमें से कोई नहीं।

18. प्रथम कर्नाटक युद्ध के बाद हुए 'आक्सा ला-शैपेल' की संधि के बाद निम्नलिखित में से कौन-सा क्षेत्र अंग्रेज़ों को वापस कर दिया गया?
   (a) पांडिचेरी (b) मद्रास
   (c) बंबई (d) कलकत्ता

19. फ्राँसीसी सरकार ने निम्नलिखित में से किस कारण डूप्ले को वापस बुला लिया था?
    (a) डूप्ले की भ्रष्ट नीति के कारण
    (b) द्वितीय कर्नाटक युद्ध में डूप्ले की हार के कारण
    (c) डूप्ले द्वारा चंद्रनगर पर कब्ज़ा न कर पाने के कारण
    (d) मुगल शासन के साथ समन्वय न कर पाने के कारण

20. अंग्रेज़ों को निम्नलिखित में से किस मुगल शासक के शासनकाल में सूरत, मसुलीपट्टनम तथा विशाखापट्टनम के कारखानों से अपने अधिकार खोने पड़े थे?
    (a) शाहजहाँ (b) जहाँगीर
    (c) औरंगजेब (d) अकबर द्वितीय

21. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
    1. 1760 ई. में वांडिवाश के युद्ध में फ्राँसीसियों की जीत हुई।
    2. तृतीय कर्नाटक युद्ध का अंत 1763 ई. में 'पेरिस की संधि' से हुआ।

    उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
    (a) केवल 1 (b) केवल 2
    (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

22. निम्नलिखित में से कौन-सी भारत में पुर्तगालियों की उपलब्धि थीं?
    1. तंबाकू की खेती
    2. प्रिंटिंग प्रेस की शुरुआत
    3. कार्टेल पर आधारित व्यापारिक व्यवस्था

    कूट:
    (a) केवल 1 और 2
    (b) केवल 2 और 3
    (c) केवल 1 और 3
    (d) 1, 2 और 3

23. फ्राँसीसी व्यापारिक कंपनी की स्थापना किस फ्राँसीसी शासक के शासनकाल में हुई थी?
    (a) लुई 14वाँ
    (b) लुई 16वाँ
    (c) नेपोलियन द्वितीय
    (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तरमाला

1. (d)	2. (a)	3. (b)	4. (c)	5. (a)	6. (b)	7. (c)	8. (b)	9. (c)	10. (c)
11. (c)	12. (d)	13. (a)	14. (b)	15. (c)	16. (d)	17. (a)	18. (b)	19. (b)	20. (c)
21. (b)	22. (a)	23. (a)							

दीर्घउत्तरीय प्रश्न

1. पुर्तगालियों के भारत आगमन से भारत एवं यूरोप के मध्य व्यापार के क्षेत्र में एक नए युग का सूत्रपात हुआ। टिप्पणी लिखिये।
2. अंग्रेज़ों को भारत की किन दशाओं ने आगमन हेतु प्रेरित किया?
3. कर्नाटक के युद्धों के मूल कारणों पर प्रकाश डालिये।

अध्याय
2

अंग्रेज़ों की भारत विजय (British Conquest of India)

2.1 बंगाल का अधिग्रहण
2.2 आंग्ल-मैसूर संबंध
2.3 आंग्ल-मराठा संबंध
2.4 पंजाब का अधिग्रहण
2.5 लॉर्ड वेलेजली की सहायक संधि प्रणाली
2.6 डलहौज़ी का व्यपगत सिद्धांत
2.7 देशी रियासतों के प्रति ब्रिटिश नीति

अंग्रेज़ों की भारत विजय के संदर्भ में विभिन्न विद्वानों द्वारा मुख्यत: दो मत प्रस्तुत किये जाते हैं। प्रथम मतानुसार, यह विजय निरुद्देश्य, आकस्मिक एवं अनभिप्रेत थी। इस मत के प्रणेताओं का मुख्य तर्क यह है कि ईस्ट इंडिया कंपनी एक व्यापारिक कंपनी थी जो राजनीतिक महत्त्वाकांक्षाओं से बहुत दूर थी। इसका मुख्य उद्देश्य व्यापार करना था, किंतु संयोगवश यहाँ की राजनीतिक परिस्थितियों ने उन्हें भारतीय राजनीतिक संघर्ष के लिये प्रेरित किया। परिणामस्वरूप, वे भारतीय राज्यों से युद्ध कर उनका विलय करने के लिये बाध्य हो गए। उन्हें अपनी व्यापारिक महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति एवं अपने व्यक्तिगत हितों की सुरक्षा के लिये भी यहाँ की क्षेत्रीय शक्तियों से युद्ध करना पड़ा। परिणामत: उन्होंने भारतीय साम्राज्य हासिल कर लिया। दूसरे मतानुसार, अंग्रेज़ों द्वारा एक निश्चित एवं सुनियोजित योजना के तहत भारत का अधिग्रहण किया गया। इस मत के समर्थन में यह तर्क दिया जाता है कि अंग्रेज़ों ने एक निश्चित योजना के अनुसार संगठित होकर एक व्यापारिक कंपनी का गठन किया एवं उसके बाद भारत में प्रवेश किया। उन्होंने धीरे-धीरे अपनी कूटनीतिक चालों का प्रयोग कर अपने राजनीतिक अधिकारों में बढ़ोतरी की तथा अपनी आक्रामक नीतियों से भारतीय राज्यों का अधिग्रहण कर लिया। इस प्रकार साम, दाम, दण्ड, भेद जैसी नीतियों का प्रयोग करते हुए उन्होंने भारतीय साम्राज्य को हासिल कर लिया।

बिना किसी पूर्वाग्रह के विश्लेषण करने पर हम पाते हैं कि ये दोनों विचार अतिशयोक्तिपूर्ण हैं तथा तर्कसंगत नहीं हैं। यदि व्यवस्थित रूप से विस्तृत विवेचना की जाए तो इन दोनों मतों में तार्किक विश्लेषण का अभाव है। अत: यह कहना ही सही होगा कि अंग्रेज़ों द्वारा भारतीय राज्यों का अधिग्रहण संयोगवश शुरू हुआ, किंतु कुछ समय के बाद अंग्रेज़ों की राजनीतिक महत्त्वाकांक्षाएँ जागृत हो उठीं। परिणामस्वरूप उन्होंने भारतीय राज्य की कल्पना के उद्देश्य से प्रेरणा लेकर अपनी राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा विदेश नीतियों का निर्माण किया। अंग्रेज़ों ने उस दिशा में भी अपने कदम बढ़ाए जो भारतीय राज्यों के विरुद्ध युद्ध करने एवं उनके विलय के उद्देश्यों से प्रेरित थी, उदाहरणार्थ- लॉर्ड वेलेजली की 'सहायक संधि', लॉर्ड हेस्टिंग्स की 'आक्रामक नीति' तथा लॉर्ड डलहौज़ी की 'हड़प नीति' इत्यादि ऐसे ही उद्देश्य थे।

17वीं सदी में भारत से लाभ कमाने के उद्देश्य से ईस्ट इंडिया कंपनी का भारत आगमन हुआ। भारतीय व्यापार पर एकाधिकार स्थापित करने की होड़ में अंग्रेज़ों को अन्य यूरोपीय कंपनियों तथा भारतीय राज्यों के विरोध का भी सामना करना पड़ा, किंतु भारतीय राज्यों के आपसी मतभेद और षड्यंत्रों ने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को उनके ऊपर अपना वर्चस्व स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण योगदान एवं अवसर प्रदान किया। अंग्रेज़ों द्वारा एक लंबी अवधि (लगभग सौ वर्ष) के बाद भारतीय राज्यों का विलय पूर्ण हुआ। इसमें कई कारकों ने सहयोग दिया, जो कि निम्नवत् हैं-

- यूरोप में हो रहे तत्कालीन राजनीतिक परिवर्तन
- शीघ्रातिशीघ्र लाभ अर्जित करने की आकांक्षा
- राष्ट्र के प्रति शूरवीरता की भावना
- भारत की अस्थिर राजनीतिक परिस्थितियाँ
- ब्रिटिश प्रशासकों एवं गवर्नर जनरलों की व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाएँ

2.1 बंगाल का अधिग्रहण *(Acquisition of Bengal)*

अंग्रेज़ों द्वारा किया गया बंगाल का अधिग्रहण भारत में 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध की ऐतिहासिक घटनाओं में प्रमुख है। केवल आठ वर्षों के अल्पकाल, अर्थात् 1757 से 1765 ई. के मध्य बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला, मीर ज़ाफर तथा मीर कासिम अपनी संप्रभुता को कायम रखने में असफल सिद्ध हुए। परिणामस्वरूप, बंगाल में ईस्ट इंडिया कंपनी की संप्रभुता स्थापित हो गई।

अध्याय
3

भारत में ब्रिटिश शासकों की आर्थिक नीति एवं उसका प्रभाव (British Ruler's Economic Policy and Its Impact in India)

3.1 भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विभिन्न चरण	3.4 विऔद्योगीकरण
3.2 भारत में अंग्रेज़ों की भू-राजस्व व्यवस्था	3.5 कृषि का व्यवसायीकरण
3.3 धन का बहिर्गमन	3.6 भारत में आधुनिक उद्योगों का विकास

भारतीय अर्थव्यवस्था पर ब्रिटिश प्रभाव मुग़ल शासक औरंगजेब की मृत्यु के बाद सहज ही परिलक्षित होने लगा था। उत्तरवर्ती मुगल शासकों द्वारा तत्कालीन यूरोपीय व्यापारियों को दी गई उदारतापूर्वक रियायतों ने स्वदेशी व्यापारियों के हितों को नुकसान पहुँचाया। साथ ही, व्यापार और वाणिज्यिक व्यवस्था भी कमज़ोर पड़ती गई। ऐसी स्थिति में यहाँ की घरेलू अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही था।

अंग्रेज़ों ने प्लासी (1757 ई.) और बक्सर (1764 ई.) के युद्धों के बाद बंगाल की समृद्धि पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। फलतः भारतीय अर्थव्यवस्था अधिशेष तथा आत्मनिर्भरतामूलक अर्थव्यवस्था से औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था में परिवर्तित हो गई। प्लासी के युद्ध के बाद बंगाल के अंतर्देशीय व्यापार में अंग्रेज़ों की भागीदारी बढ़ गई। कंपनी के कर्मचारियों ने व्यापार के लिये प्रतिबंधित वस्तुओं जैसे– शोरा, नमक, सुपारी और तंबाकू के व्यापार पर भी अधिकार कर लिया। बंगाल विजय से पूर्व, अंग्रेज़ी सरकार ने अपने कपड़ा उद्योग के संरक्षण के लिये विविध प्रयास किये। इनमें भारत से आने वाले सूती कपड़ों के आयात पर आयात कर; भारतीय रेशमी एवं छपे या रंगे हुए वस्त्रों के प्रयोग पर इंग्लैण्ड में प्रतिबंध आदि प्रमुख हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था को ब्रिटिश औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था में परिवर्तित करने के पीछे ब्रिटिश सरकार का मुख्य उद्देश्य अपने उद्योगों के लिये अच्छा व सस्ता माल प्राप्त करना और अपने उत्पादों को भारतीय बाज़ार में ऊँची कीमतों पर बेचना था।

3.1 भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विभिन्न चरण *(Different Stages of British Colonialism in India)*

उपनिवेशवाद एक ऐसी संरचना होती है, जिसके माध्यम से किसी भी देश का आर्थिक शोषण तथा उत्पीड़न होता है। इस संरचना के अंतर्गत कई प्रकार के विचारों, व्यक्तित्वों और नीतियों का समावेश किया जा सकता है। यही उपनिवेशवादी संरचना वास्तव में उपनिवेशवादी नीति का निर्णायक तत्त्व होता है। उपनिवेशवाद का मूल तत्त्व 'आर्थिक शोषण' में निहित होता है, लेकिन किसी उपनिवेश पर राजनीतिक कब्ज़ा बनाए रखने की दृष्टि से इसका भी अपना महत्त्व होता है।

भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद मुख्यतः तीन चरणों से गुज़रा। ये विभिन्न चरण भारत के आर्थिक अधिशेष को हड़पने के विभिन्न उपायों पर आधारित थे। रजनीपाम दत्त ने अपनी कृति 'इंडिया टुडे' में भारतीय औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था का अच्छा चित्रण किया है। इसमें उन्होंने कार्ल मार्क्स के भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद और आर्थिक शोषण के जिन तीन चरणों वाले सिद्धांत को आधार बनाया है, वे निम्नवत् हैं–

1. वाणिज्यिक चरण : 1757 ई. से 1813 ई.
2. औद्योगिक मुक्त व्यापार : 1813 ई. से 1858 ई.
3. वित्तीय पूंजीवाद : 1858 ई. के बाद की अवस्था

आरंभिक चरण अर्थात् 17वीं और 18वीं शताब्दी में ब्रिटिश उपनिवेशवाद का मुख्य उद्देश्य भारत के साथ व्यापार करने के बहाने उसे लूटना ही था। आगे चलकर 19वीं शताब्दी में भारत का प्रयोग ब्रिटेन में बनी हुई औद्योगिक वस्तुओं के लिये मुख्य बाज़ार के रूप में किया गया। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में और 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में भारत स्थित ब्रिटिश उद्योगपतियों द्वारा देश में पूंजी-विनियोग की प्रक्रिया आरंभ की गई। इसे भारतीय श्रमिकों के बड़े पैमाने पर शोषण का आरंभ कहा जा सकता है।

अध्याय
4

ब्रिटिश भारत में औपनिवेशिक नीतियाँ (Colonial Policies in British India)

4.1 ब्रिटिश भारत में शिक्षा का विकास
4.2 भारत में प्रेस का विकास
4.3 ब्रिटिश भारत में स्थानीय स्वशासन का विकास
4.4 ब्रिटिश भारत में रेलवे का विकास
4.5 अकाल नीति
4.6 ब्रिटिश साम्राज्य का प्रशासनिक ढाँचा
4.7 अंग्रेज़ों की विदेश नीति

4.1 ब्रिटिश भारत में शिक्षा का विकास *(Educational Development in British India)*

भारत की परंपरागत शिक्षा प्रणाली तथा शिक्षण संस्थाओं को मुगल साम्राज्य के पतन के बाद ज़बरदस्त धक्का लगा और देश में राजनीतिक अस्थिरता के कारण शिक्षा के माहौल में लगातार गिरावट आने लगी। कंपनी की भारत विजय के बाद भी अंग्रेज़ों ने शिक्षा को निजी हाथों में ही रहने दिया। अंग्रेज़ी सिखाने के लिये स्कूलों का जाल बिछा देने का विचार सबसे पहले ईस्ट इंडिया कंपनी के एक सिविल सेवक चार्ल्स ग्रांट (Charles Grant) के मन में आया। उसने शिक्षा के प्रचार के लिये अंग्रेज़ी भाषा को ही सबसे उपयुक्त माध्यम बताया। वास्तव में, अंग्रेज़ी शिक्षा की अग्रिम रूपरेखा का निर्माण चार्ल्स ग्रांट ने ही किया। इसीलिये उसे 'भारत में आधुनिक शिक्षा का जन्मदाता' कहा जाता है।

इसी बीच 1781 में गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स ने कलकत्ता मदरसा (Calcutta Madrasa) की स्थापना की, जिसका उद्देश्य कंपनी के भारतीय अधिकारियों को फारसी (तत्कालीन कामकाज की भाषा) का कार्यसाधक ज्ञान कराना था। तत्पश्चात् सन् 1784 में हेस्टिंग्स के सहयोगी सर विलियम जोंस ने एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल (Asiatic Society of Bengal) की स्थापना की, जिसने प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति के अध्ययन हेतु महत्त्वपूर्ण प्रयास किये। उन्होंने 'एशियाटिक रिसर्चेज' नामक पत्रिका का प्रकाशन किया, जिसका उद्देश्य भारत के गौरवशाली अतीत को प्रकाश में लाना था। नवंबर 1784 में एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल के एक सदस्य विल्किंसन ने पहली बार मूल 'श्रीमद्भगवद्गीता' का संस्कृत से अंग्रेज़ी में अनुवाद किया। तत्पश्चात् 1787 में विल्किंसन ने 'हितोपदेश' का भी अनुवाद किया। 1789 ई. में विलियम जोन्स ने कालिदास रचित 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' का अंग्रेज़ी अनुवाद भी किया। इसके पश्चात् सन् 1792 में विलियम जोन्स ने 'गीतगोविंद' का अंग्रेज़ी अनुवाद किया और उनकी मृत्यु के बाद सन् 1794 में 'इंस्टीट्यूट ऑफ हिंदू लॉ' के नाम से 'मनुस्मृति' का अनुवाद प्रकाशित हुआ। वस्तुतः विलियम जोंस तथा विल्किंसन महोदय भारत विषयक ज्ञानशास्त्र के जन्मदाता थे। मनुस्मृति ही वह प्रथम ग्रंथ है जिसका अनुवाद सबसे पहले संस्कृत से अंग्रेज़ी भाषा में 'ए कोड ऑफ जेंटू लॉज़' (A Code of Gentoo Laws) के नाम से प्रकाशित हुआ।

ब्रिटिश रेजीडेंट जोनाथन डंकन के प्रयत्नों के फलस्वरूप 1791 ई. में बनारस में एक संस्कृत कॉलेज खोला गया, जिसका उद्देश्य हिंदुओं के धर्म, साहित्य और कानून का अध्ययन और प्रसार करना था। सन् 1800 में लॉर्ड वेलेजली ने कंपनी के असैनिक अधिकारियों की शिक्षा के लिये फोर्ट विलियम कॉलेज (Fort William College) की स्थापना की। इस कॉलेज में अंग्रेज़ी-हिंदुस्तानी कोश, हिंदुस्तानी व्याकरण तथा कुछ अन्य पुस्तकें प्रकाशित की गईं, परंतु यह कॉलेज सन् 1802 में निदेशकों के आदेश से बंद कर दिया गया।

ईसाई मिशनरियों ने भारत में शिक्षा के प्रसार के लिये महत्त्वपूर्ण प्रयास किये। उन्होंने भारत में अनेक अंग्रेज़ी विद्यालय स्थापित किये, फिर भी समस्त जनता को अंग्रेज़ी माध्यम से शिक्षा देने को नितांत अव्यावहारिक बताया। उन्होंने सरकार की इस कारण आलोचना की कि वह भारतीय भाषाओं के विद्यालयों की उपेक्षा कर रही है। ईसाई मिशनरियों ने केवल उन्हीं स्थानों में अंग्रेज़ी माध्यम से पाश्चात्य ज्ञान और अंग्रेज़ी साहित्य की शिक्षा को प्रोत्साहन दिया जहाँ उन्हें सफलता मिलने की आशा थी। मिशनरियों ने आधुनिक भारतीय भाषाओं के अध्ययन को महत्त्व दिया। इस शृंखला में शब्दकोश तैयार किये गए, व्याकरण पर पुस्तकें लिखी गईं, बाइबिल का भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया। नारी शिक्षा के क्षेत्र में भी मिशनरियों ने अग्रणी कार्य किया। उन्होंने

अध्याय
5

ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह (Revolts Against British Empire)

5.1 1857 का विद्रोह
5.2 अन्य जन-आंदोलन
5.3 ब्रिटिश भारत में जनजातीय आंदोलन
5.4 ब्रिटिश भारत में किसान आंदोलन

5.1 1857 का विद्रोह *(Revolt of 1857)*

भारत के इतिहास में 1857 का विद्रोह एक युगांतकारी घटना मानी जाती है। सन् 1757 की प्लासी की लड़ाई और 1857 के विद्रोह के बीच ब्रिटिश शासन ने अपने 100 वर्ष पूरे कर लिये थे। इन 100 वर्षों में कई बार ब्रिटिश सत्ता को चुनौतियाँ मिलीं, किंतु 1857 का विद्रोह एक ऐसी चुनौती थी जिसने भारत में अंग्रेज़ी शासन की जड़ों को हिलाकर रख दिया।

विद्रोह का स्वरूप *(Nature of the revolt)*

सन् 1857 के विद्रोह के संबंध में भिन्न-भिन्न विचार व्यक्त किये गए हैं। साम्राज्यवादी इतिहासकारों ने एकपक्षीय तर्क देते हुए इसे सिर्फ 'सैनिक विद्रोह' की संज्ञा दी है तो कुछ ने इसे दो नस्लों अथवा दो धर्मों का युद्ध बताया है। इस मत के विरुद्ध राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने इसे 'राष्ट्रीय विद्रोह' की संज्ञा दी है तो किसी ने इसे 'स्वतंत्रता संग्राम का प्रथम युद्ध' बताया है। तथापि, इस विद्रोह के वास्तविक स्वरूप को जानने के लिये तथा किसी निष्कर्ष पर पहुँचने से पूर्व इन सभी अवधारणाओं की तथ्यों के साथ तार्किक व्याख्या आवश्यक होगी।

वस्तुत: 1857 का विद्रोह एक सिपाही के विद्रोह के रूप में प्रारंभ हुआ। अत: साम्राज्यवादी विचारधारा के इतिहासकार सर जॉन लारेंस एवं सर जॉन सीले ने इसे सैनिक विद्रोह की संज्ञा दी है, परंतु यह व्याख्या तार्किक प्रतीत नहीं होती। निस्संदेह, इस विद्रोह का प्रारंभ सिपाहियों ने किया, परंतु सभी स्थानों पर यह सिर्फ सेना तक सीमित नहीं रहा बल्कि इसमें जनता के हर तबके की हिस्सेदारी रही। अवध और बिहार के कुछ इलाकों में तो इसे पूरा जन-समर्थन मिला। इंग्लैंड के रूढ़िवादी नेता बैंजामिन डिज़रायली ने इस विद्रोह को एक राष्ट्रीय विद्रोह कहा, किंतु उनका यह मानना भी तर्कसंगत नहीं लगता क्योंकि उस समय भारत किसी राष्ट्र के रूप में संगठित नहीं था बल्कि वह जन-असंतोष, निष्ठा एवं उद्देश्यों के आधार पर विभाजित था।

एक अन्य साम्राज्यवादी इतिहासकार एल.ईआर. रीस ने इसे धर्मांधों का ईसाई धर्म के विरुद्ध युद्ध बताया है, किंतु उनके इस तथ्य में सत्य का अंश ढूंढना मुश्किल ही होगा। यद्यपि इस संघर्ष में भिन्न-भिन्न धर्मों को मानने वालों ने दोनों ओर से युद्ध किया तथा अपनी कमियों एवं अन्यायों को छुपाने के लिये धर्म का सहारा लिया, तथापि विद्रोह के अंत में निश्चय ही ईसाई जीते, न कि ईसाई धर्म। एक अन्य विद्वान टी.आर. होम्स की अवधारणा, जिसके अनुसार उन्होंने इस युद्ध को बर्बरता और सभ्यता के बीच युद्ध कहा है, भी तार्किक प्रतीत नहीं होती क्योंकि इसमें संकीर्ण जाति-भेद झलकता है। दूसरी ओर, 1857 के संघर्ष में अंग्रेज़ी सेनानायक सर जेम्स आउट्रम और टेलर ने इस विद्रोह को हिंदू-मुस्लिम षड्यंत्र का परिणाम बताया है। इनका मानना था कि यह विद्रोह मूलत: मुस्लिम षड्यंत्र था, जिसमें हिंदुओं की शिकायतों का लाभ उठाया गया। बहरहाल, विश्लेषण करने पर हम पाते हैं कि यह व्याख्या तर्कसंगत नहीं है क्योंकि बहादुरशाह ज़फर ने तो इस विद्रोह को केवल नेतृत्व प्रदान किया था, जिसका कारण महज़ इतना था कि वे मुगल साम्राज्य के सांकेतिक प्रतीक थे।

इस विद्रोह को भारत के राष्ट्रीय नेताओं एवं राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने राष्ट्रीय विद्रोह बताने की कोशिश की ताकि इसके माध्यम से राष्ट्रवादी विचार को जाग्रत् किया जा सके। इस दिशा में शुरुआत वी.डी. सावरकर द्वारा की गई, जिन्होंने इसका वर्णन 'सुनियोजित राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम' के रूप में किया तथा इसे सिद्ध करने का प्रयास किया। उनके अनुसार, 1826-27, 1830-31 और 1848 के विद्रोहों की शृंखला 1857 में होने वाली घटना का पूर्व-संकेत मात्र थी। डॉ. एस.एन. सेन अपनी पुस्तक 'एट्टीन फिफ्टी सेवन' (Eighteen Fifty Seven) में आंशिक रूप से इस मत से सहमत होते हुए कहते हैं- "जो कुछ धर्म के लिये लड़ाई

अध्याय
6

सामाजिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक सुधार आंदोलन (Social, Cultural and Religious Reform Movements)

6.1 भारत में सुधार आंदोलनों का उदय
6.2 सामाजिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक सुधार आंदोलनों की प्रकृति
6.3 सुधार आंदोलनों की प्रवृत्ति
6.4 19वीं शताब्दी के प्रमुख सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन
6.5 सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन के केंद्र में महिलाएँ
6.6 मुस्लिम सुधार आंदोलन
6.7 सिख सुधार आंदोलन
6.8 पारसी सुधार आंदोलन
6.9 जाति और समाज सुधार
6.10 ब्रिटिश सामाजिक-सांस्कृतिक नीतियाँ

6.1 भारत में सुधार आंदोलनों का उदय *(Emergence of Reform Movements in India)*

ब्रिटिश शासन के दौरान शुरू की गई नई सामाजिक, आर्थिक एवं प्रशासनिक प्रणाली ने भारतीय समाज के आधारभूत ढाँचे में आमूलचूल परिवर्तन ला दिया। परिणामस्वरूप, पुरातन एवं नई व्यवस्था के संघर्ष ने भारतीय समाज में एक आंतरिक उथल-पुथल को जन्म दिया जिसकी परिणति सामाजिक सुधार आंदोलनों के रूप में देखने को मिली। भारत में पाश्चात्य शिक्षा (Western Education) का आरंभ भी सामाजिक-सांस्कृतिक जागरण का एक महत्त्वपूर्ण कारण था। इस सामाजिक-सांस्कृतिक जागरण में पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन लोगों ने पाश्चात्य लोकतंत्र, स्वतंत्रता, समानता एवं न्याय के आधारभूत सिद्धांतों के साथ-साथ तार्किक, वैज्ञानिक एवं मानवतावादी मूल्यों को भी अपनाया था। इन मूल्यों से प्रभावित होकर इस वर्ग ने तत्कालीन भारतीय समाज की रूढ़ियों और जड़ताओं को खत्म करने का प्रयास किया। उन्होंने अस्पृश्यता, जातिवाद, सामाजिक विषमता, कर्मकांड, अंधविश्वास आदि का विरोध करते हुए नई शिक्षा के माध्यम से समाज में आधारभूत परिवर्तन लाने का प्रयास किया। उन्नीसवीं सदी में इस सांस्कृतिक जागरण के प्रस्फुटन का एक सूत्र पश्चिमी देशों द्वारा प्रचारित की जा रही अपनी जातीय, भाषायी एवं सांस्कृतिक श्रेष्ठता के विरुद्ध भारतीयों की प्रतिक्रिया के रूप में भी देखा जा सकता है। वास्तव में, यही वह ब्रिटिश दंभ था जिसने भारतवासियों को पुनः अपने अतीत के गौरवशाली पृष्ठों को पलटने और उनकी पुनर्व्याख्या किये जाने को प्रेरित किया।

उपर्युक्त कारणों के अतिरिक्त कुछ अन्य स्थूल कारणों ने भी सामाजिक-सांस्कृतिक आंदोलनों की पृष्ठभूमि तैयार करने की प्रेरणा दी। उन्नीसवीं सदी में ब्रिटिश शासन की स्थापना होने के बाद हुए तकनीकी परिवर्तनों से भारतीयों के बीच न केवल सामाजिक संपर्क बढ़ने लगा, बल्कि उनके सामाजिक समूहों का पुराना ढाँचा भी विघटित होने लगा। जाति-प्रथा के बंधन अब शिथिल पड़ गए तथा पारंपरिक स्वावलंबी ग्रामीण अर्थव्यवस्था ने अपनी पहचान ही खो दी। इन सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिवर्तनों ने भारतीयों के बीच एकता बढ़ाई। आधुनिक तकनीकी परिवर्तनों, जैसे– रेल, डाक-तार व अन्य द्रुतगामी संचार माध्यमों के प्रयोग से भारत के विभिन्न प्रदेशों के बीच की दूरियाँ कम हो गईं। इन बदलावों ने सामाजिक समूहों के अंतर्संबंधों को प्रभावित किया और इस प्रकार एक नई जीवंत इकाई का प्रादुर्भाव हुआ। परंपरागत व्यवस्था के लिये यह स्थिति सामाजिक मूल्यों की चुनौती के रूप में सामने आई, जिसके प्रति देश भर में गंभीर प्रतिक्रिया देखी गई। इस स्थिति ने एक बौद्धिक एकता (Intellectual Unity) को प्रोत्साहन दिया। इस तरह भारतीय नवजागरण की चेतना जगाने में पश्चिमी देशों से संपर्क का महत्त्वपूर्ण प्रभाव रहा है। परंतु, गौरतलब है कि इसे उपनिवेशवादी शासन द्वारा प्रारंभ किया गया सुधारात्मक प्रयास नहीं मानना चाहिये। वास्तव में, भारत में पश्चिमी शिक्षा के प्रचार-प्रसार एवं रेल, डाक, तार आदि संचार माध्यमों द्वारा देश भर में संपर्क-सूत्र कायम कर देने का प्रयास अंग्रेज़ी शासन के प्रशासनिक एवं राजनीतिक हितों को साधने के लिये हुआ, न कि भारतीयों को जागरूक बनाने के लिये।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि व्यापक स्तर पर सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक पुनर्जागरण की प्रक्रिया भारत में अनेक तत्त्वों के समन्वित प्रभाव से ही आरंभ हुई। इसके मूल में उभरता हुआ पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त मध्यवर्ग था। इस वर्ग ने धार्मिक सार्वभौमिकता, मानवतावाद, तर्कवाद एवं विज्ञानवाद को बौद्धिक आधार (Intellectual Base) बनाते हुए सुधार आंदोलन को

अध्याय
7

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन (Indian National Movement)

7.1 भारत में राष्ट्रवाद का उदय
7.2 भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस की स्थापना
7.3 क्रांतिकारी आतंकवाद का प्रथम चरण : 1905-15 ई.
7.4 बंगाल विभाजन एवं स्वदेशी आंदोलन
7.5 होमरूल आंदोलन
7.6 ब्रिटिश भारत में मज़दूर आंदोलन
7.7 वामपंथी विचारधारा का विकास

7.1 भारत में राष्ट्रवाद का उदय *(Rise of Nationalism in India)*

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भारतीयों में राष्ट्रीय राजनीतिक चेतना का विकास बहुत तेज़ी से हुआ और भारत में एक संगठित राष्ट्रीय आंदोलन का सूत्रपात हुआ। पाश्चात्य शिक्षा का विस्तार, मध्यवर्ग का उदय, रेलवे का विस्तार तथा सामाजिक-धार्मिक आंदोलनों ने राष्ट्रवाद की भावना के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसी क्रम में दिसंबर 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस की स्थापना हुई, जिसके नेतृत्व में भारतीयों ने एक लंबा और साहसपूर्ण संघर्ष चलाया और अंततः 15 अगस्त, 1947 को देश को ब्रिटिश दासता से मुक्ति दिलाई।

इल्बर्ट बिल विवाद

1861 में समस्त देश में एक समान फौजदारी कानून लागू किया गया। इससे पूर्व भारत में प्रेसीडेंसी नगरों में यूरोपियन कानून तथा ग्रामीण क्षेत्रों में मुगल कानून प्रचलित थे। उस समय यह प्रथा बन गई थी कि प्रेसीडेंसी नगरों के भारतीय न्यायाधीश तो यूरोपियन तथा भारतीयों दोनों के मुकदमों की सुनवाई कर सकते थे, किंतु ग्रामीण क्षेत्रों में किसी यूरोपियन के मुकदमे की सुनवाई का अधिकार केवल यूरोपियन न्यायाधीश को ही था।

1882 में एक भारतीय न्यायाधीश बिहारी लाल गुप्ता की पदोन्नति होने से एक विचित्र स्थिति उत्पन्न हो गई। वह कलकत्ता में पद पर रहते हुए यूरोपियन व्यक्तियों की सुनवाई कर सकते थे, किंतु पदोन्नति के पश्चात् ग्रामीण क्षेत्र में नियुक्त होने से वह यूरोपियन लोगों की सुनवाई के अधिकार से वंचित हो गए।

अपने अधिकारों में कटौती होने का विरोध करते हुए उन्होंने बंगाल के उप-गवर्नर को पत्र लिखा। इसी घटनाक्रम के आधार पर सर पी.सी. इल्बर्ट, जो कि वायसरॉय की परिषद में विधि सदस्य थे, ने 1883 में एक बिल पेश किया जिसका उद्देश्य था 'जाति-भेद पर आधारित न्यायिक अयोग्यताएँ' समाप्त की जाएँ। बिल पेश करने पर एक बड़ा विवाद उत्पन्न हो गया, क्योंकि असल में यूरोपियन बागानों के ठेकेदारों और पूंजीपतियों के लिये अब तक यह विशेषाधिकार 'सेफ गार्ड' की तरह कार्य करते थे जो कि अक्सर अपने मज़दूरों तथा कर्मचारियों का शोषण करते थे और विवाद होने पर यूरोपियन न्यायाधीश उन्हें छोटी-मोटी सज़ा देकर छोड़ देते थे।

अपने विशेषाधिकारों की रक्षा के लिये उन्होंने एक प्रतिरक्षण संघ बनाया तथा ₹1.5 लाख का चंदा एकत्रित करके इस बिल के खिलाफ भारत और लंदन दोनों जगह दुष्प्रचार किया तथा नस्लीय आधार पर भारतीयों को यूरोपियन लोगों की सुनवाई हेतु अयोग्य ठहराया। अंग्रेज़ों द्वारा लॉर्ड रिपन की काफी आलोचना की गई। अंततः उसे झुकना पड़ा और नया संशोधित विधेयक पेश किया गया जिसके अनुसार यदि यूरोपियन व्यक्तियों के मामले दंडनायकों अथवा सेशन जज के समक्ष आते हैं तो उनकी सुनवाई 12 सदस्यीय ज्यूरी द्वारा की जाएगी जिसमें कम-से-कम 7 सदस्य यूरोपियन अथवा अमेरिकन होंगे। यदि ग्रामीण क्षेत्र में ज्यूरी उपलब्ध नहीं हो तो ऐसे में मामले की सुनवाई उच्च न्यायालय को हस्तांतरित करनी होगी। अंततः इन प्रावधानों से स्पष्ट है कि बिल का आरंभिक लक्ष्य प्राप्त नहीं किया जा सका। लेकिन इस विवाद से परोक्षतः लाभ भारतीयों को भी हुआ क्योंकि अंग्रेज़ों के इस नस्लीय भेदभाव ने भारतीयों में तीव्र आक्रोश उत्पन्न कर दिया जिससे राष्ट्रीय चेतना को बल मिला।

इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि ब्रिटिश उपनिवेशवादी नीतियों तथा भारतीय हितों के टकराव ने भारत में एक नए युग का सूत्रपात किया जिसने परवर्ती राष्ट्रीय आंदोलन की आधारशिला रखी।

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS
YouTube Drishti IAS
drishtiias
drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 8750187501, 011-47532596